तात्पर्य

सकाम कर्मों के विधि-विधान के अनुसार कुल के पितरों के लिए नियमित रूप से पिण्डोदक अर्पण करना आवश्यक है। यह अर्पण विष्णु-आराधना सहित किया जाता है, क्योंकि श्रीविष्णु को अर्पित अन्न का भोजन सब प्रकार के पाप-बन्धनों से मुक्त कर देता है। पापकर्मवश पितरों को विभिन्न दुःख भोगने पड़ते हैं। कुछ को तो स्थूल प्राकृत देह की प्राप्ति भी नहीं होती, जिससे वे प्रेत योनि के सूक्ष्म शरीर में रहने का बाध्य हो जाते हैं। वंशजों से प्रसाद का अंश ग्रहण कर ये पितर प्रेत आदि दुर्गतिमय योनियों से मुक्त हो जाते हैं। इस विधि से पितरों की सहायता करना कुलधर्म है और जो भक्ति के परायण नहीं हैं, वे तो इन कृत्यों का अनुष्ठान अवश्य ही करें। भक्तिनिष्ठ उत्तम भक्त के लिए ये आवश्यक नहीं हैं। केवल भगवद्भक्ति सहस्रों पितरों को सब प्रकार की दुर्गतियों से पूर्ण मुक्त कर सकती है। श्रीमद्भागवत में उल्लेख हैः

देवर्षिभूताप्तनृणां पितृणां न किंकरो नायमृणी च राजन्।
सर्वात्मना यः शरणं शरण्यं गतो मुकुन्दं परिहृत्य कर्तम्।।

'जो पुरुष अन्य सब कर्तव्यों को त्याग कर दृढ़तापूर्वक मुक्तिदाता श्रीमुकुन्द की ही शरण ले लेता है, उसका देवताओं, ऋषियों, सब प्राणियों, स्वजनों, मानव-समाज और पितरों के प्रति कोई कर्तव्य अथवा ऋण शेष नहीं रहता।' (भा० ११.५.४१) भगवान् श्रीकृष्ण की भक्ति से सभी ऋणों का स्वतः विमोचन हो जाता है।

दोषैरेतैः कुलघ्नानां वर्णसंकरकारकैः।
उत्साद्यन्ते जातिधर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः।।४२।।

दोषैः=दोषों से; **एतैः**=इन; **कुलघ्नानाम्**=कुलघातियों के; **वर्णसंकरकारकैः**=अवाञ्छित सन्तान करने वाले; **उत्साद्यन्ते**=नष्ट हो जाते हैं; **जातिधर्माः**=जातिधर्म; **कुलधर्माः**=कुलधर्म; **च**=भी; **शाश्वताः**=सनातन।

अनुवाद

कुलघातियों के इन दोषों से सभी शाश्वत् जातिधर्म तथा कुलधर्म नष्ट हो जाते हैं।।४२।।

तात्पर्य

सनातनधर्म अथवा वर्णाश्रम धर्म के अन्तर्गत मानव समाज के चार वर्णों तथा कुलधर्मों का प्रयोजन मानव को मुक्त कराना है। अतः जब समाज के अनुत्तरदायी लोकनायक सनातनधर्म-परम्परा को विखण्डित कर देते हैं, तो समाज में विप्लव हो जाता है, जिससे जनता जीवन के लक्ष्य—श्रीविष्णु को भूल बैठती है। ऐसे नेत्रहीन लोकनायकों के अनुगामी पथभ्रष्ट होकर निश्चित विनाश की ओर ही अग्रसर होते हैं।